International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 01, January- 2021
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|

किशोरों में सावेंगिक बुद्धि एवं तनाव का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन

Priyanka Mishra, Research Scholar, Dept of education, Kalinga University

Dr. Aditya Prakash Saxena, Professor, Dept of Education, Kalinga University

भोध सारां

किसी भी राष्ट्र की उन्नति वहां के विद्यार्थियों की योग्यता पर ही निर्भर करती है। किसी भी विद्यार्थी में सभी योग्यताएँ अन्तर्निहित होती है, जिन्हे शिक्षा के माध्यम से उजागर किया जाता है व जिन्हें समाजोपयोगी व राष्ट्रोपयोगी बनाया जाता है। बालक की अन्तर्निहित योग्यताओं का शिक्षा में समागम होकर प्राप्त होने वाले निष्कर्षों में उसके आन्तरिक संवेग महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। जो बालक संवेगात्मक रूप से परिपक्व होते है, उनकी बुद्धिलब्धि भी उच्च होती है। वहीं संवेगात्मक रूप से कमजोर बालक बुद्धिमान होते हुए भी अपनी क्षमताओं का उपयोग नहीं कर पाता। इस सम्बन्ध में शोधकर्ताओं ने अनेक प्रयोग किये। किशोर अपने बौद्धिक स्तर के अनुसार अधिगम व चिन्तन करते हो। किशोरावस्था में.बुद्धि की अहम् आवश्यकता है। उच्च बौद्धिक स्तर का किशोर प्रतिभाशाली होता है और समाज के मान्य कृत्यों को करता हुआ समायोजित हो जाता है। इसके विपरीत निम्न बौद्धिक स्तर का किशोर मन्द बुद्धि बालक होता है और किशोर असमायोजित होता हुआ कल्पना जगत में विचरण करता रहता है। बुद्धि का संवेग पर स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है और किशोर अपने संवेगात्मक परिपक्वता के आधार पर अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है। संवेग की उग्रता किशोरावस्था की विशेषता है, यही तनाव, टकराव, माता–पिता से झगड़ा आदि के मांध्यम से परिलक्षित होता है। जिन किशोरों में संवेगात्मक परिपक्वता में स्थिरता होती है उनका प्रभाव उनकी अध्ययन आदतों पर पड़ता है। यदि बालक में अच्छी आदतों का विकास होता है तो वह सफलतापूर्वक किसी भी कार्य को कर सकता है। इसके लिये विद्यालय, अध्यापक, माता–पिता, भाई–बहनों को मंहत्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए।

मुख्य शब्दः संवेगात्मक बुद्धि, शैक्षिक उपलब्धि, योग्यता, माता–पिता, भाई–बहनों ।

1. प्रस्तावना

फलता जीवन में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, यह व्यक्ति की कड़ी मेहनत, लगन, निष्ठा, योग्यता, बुद्धिमत्ता और सकारात्मक व्यवहार की साक्षी होती है। हर व्यक्ति की इच्छा होती है कि वह जीवन के उच्चतम शिखर पर पहुँच जाए। विद्यार्थियों के लिए शैक्षिक उपलब्धि सफलता का बहुत बड़ा सूचक है। बच्चों की सफलता माता–पिता के जीवन का प्रमुख उद्देश्य है । हर माता–पिता अपने बच्चे को सफलताओं के शिखर पर देखना चाहते हैं। ऐसी अवधारणा रही है कि बुद्धिमान तथा प्रतिभाशाली

बच्चों का भविष्य सफल होता है। इस दिशा में हुई अनक शोधों ने ये पाया गया कि बचपन में प्रतिभाशाली और प्रखर बुद्धि वाले बालकों आगे अपने जीवन क्षेत्र में सफल व संतुष्ट हो यह आवश्यक नहीं। पिछले कुछ दशकों से विश्व स्तर पर सफलताओं व असफलताओं के कारण को जानने के लिए अनुसंधान किए जा रहे हैं । अनगिनत शोधों ने यह सिद्ध कर दिया है कि व्यक्ति की सफलता विभिन्न संज्ञानात्मक एवं गैर संज्ञानात्मक क्षेत्रों से प्रभावित होती है।

देश का उज्जवल भविष्य उस देश के बालकों के विकास पर निर्भर करता है। आज हमारे देश की शिक्षा का उद्देश्य बालकों का सर्वांगीण विकास कर उन्हें लोकतंत्र का सुयोग्य नागरिक बनाना है। यह तभी सम्भव है जब प्रत्येक बालक तर्क कर सकता हो, भेद कर सकता हो, समझ सकता हो और नई स्थिति का सामना भी कर सकता हो एवं शिक्षा के सभी औपचारिक व अनौपचारिक अभिकरण अपने अपने स्थान पर जागरूक हों। शिक्षा के अनौपचारिक अभिकरण में. बालक के घर का वातावरण प्रमुख है। बालक जो बौद्धिक स्तर एवं संवेगात्मक परिपक्वता, अध्ययन संबंधी आदत व शैक्षिक उपलब्धियाँ व शैक्षिक निष्पादन भी इस बात पर निर्भर करती है कि उसका उपर्युक्त विकास किस वातावरण में हो रहा है।

आज शिक्षण संस्थाओं मे जहाँ हम देखते हैं कि सभी बच्चों.में समान रूप से बिना किसी भेदभाव के शिक्षा ग्रहण करते समय उनकी बौद्धिक स्तर का संवेगात्मक परिपक्वता, अध्ययन आदत एवं शैक्षिक उपलब्धि स्तर में अन्तर दिखाई देता है, इस अन्तर को शिक्षण संस्थाय, शिक्षक और यहां तक की अभिभावक भी नहीं पहचान पाते हो।

विद्यालय की घर से ज्यादा दूरी, उसमें अधिकांश साधन–सुविधाओं का नहीं होना, सुरक्षा का अभाव और महंगे निजी स्कूल भी बच्चियों को विद्यालय न भेजने के खास कारण हैं। बालिका किसी समाज, समुदाय तथा परिवार की महत्वपूर्ण कड़ी ह, जो बड़ी होकर पत्नी, माता, बहन, मित्रा, तथा परिवार की आय उपार्जक जैसी अनेक महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभाती हैं। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है कि बालिकाओं की इन भूमिकाओं को निभाने में शिक्षा प्रभावी रूप से मदद कर सकती है, क्योंकि यह उनके साक्षरता कौशल को बढ़ाने के साथ–साथ अन्तःकरण के सौंदर्य तथा पारिवारिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढाने में सहायक है। भारत सरकार द्वारा 2004 में अनुसूचित जाति, जनजाति व पिछड़े वर्ग की बालिकाओं के लिए सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में आवासीय उच्च प्राथमिक विद्यालय की स्थापना के लिए कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय योजना का शुभारंभ किया गया था। कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय योजना की शुरुआत प्रथम दो वर्ष तक एक अलग योजना के रूप में सर्व शिक्षा अभियान, बालिकाओं के लिए प्राथमिक स्तर पर शिक्षा दिलाने का राष्ट्रीय कार्यक्रम व महिला समाख्या योजना के साथ सामंजस्य बैठाते हुए शुरू की गई थी, लेकिन 1 अप्रैल, 2007 से इसे सर्व शिक्षा अभियान में एक अलग घटक के

रूप में विलय कर दिया दिया। छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि द्वारा उनमें ऐसी क्षमता को विकसित किया जा सकता है जिससे चार विभिन्न रूपों में संवेगों को उचित दिशा देने में मिले जैसे संवेग विशेष का प्रत्यक्षीकरण करना, उसका विचार प्रक्रिया में समन्वय करना उसे समझना और उसका प्रबन्धन करना । बालक जब जन्म लेता है तब उसमें समस्त क्षमताएँ और उपस्थित होती है। संवेगात्मक बुद्धि जन्मजात होती है। जिसका विकास अनुभव और परिपक्वता से होता है। संवेगात्मक बुद्धि परिस्थितियों की सुझ का परिणाम है। बच्चा जन्म के साथ ही भावानात्मक संवेदनशीलता, भावानात्मक स्मृति एवं अधिगम जैसी योग्यताओं को साथ लेकर चलता है।

1.1 तनाव

तनाव के बगैर जिंदगी की कल्पना नहीं की जा सकती है। एक हद तक मनोवैज्ञानिक तनाव हमारे जीवन का एक ऐसा हिस्सा होता है, जो सामान्य व्यक्तित्व विकास के लिए आवश्यक साबित हो सकता है। हालांकि यदि ये तनाव अधिक मात्रा में उत्पन्न हो जाएं तब मनोचिकित्सा की आवश्यकता पड़ सकती है, अन्यथा ये आपको मनोवैज्ञानिक रूप से बीमार बना सकते हैं और आपमें मनोव्यथा उत्पन्न कर सकते हैं। नकारात्मक या तनावपूर्ण जीवन की घटनाओं से कई प्रकार के मानसिक व्यवधान पैदा होते हैं, जिनमें मूड तथा चिंता से जुड़े व्यवधान शामिल हैं। यौन शोषण, शारीरिक दुर्व्यवहार, भावनात्मक दुर्व्यवहार, घरेलू हिंसा, तथा डराने–धमकाने समेत बचपन और वयस्क उम्र में हुए दुर्व्यवहार को मानसिक व्यवधान के कारण माने जाते हैं, जो एक जटिल सामाजिक, पारिवारिक, मनोवैज्ञानिक तथा जैववैज्ञानिक कारकों के जरिए पैदा होते हैं। तनाव को किसी ऐसे शारीरिक, रासायनिक या भावनात्मक कारक के रूप म समझा जा सकता है, जो शारीरिक तथा मानसिक बेचौनी उत्पन्न करे और वह रोग निर्माण का एक कारक बन सकता है। ऐसे शारीरिक या रासायनिक कारक जो तनाव पैदा कर सकते हैं, उनमें – सदमा, संक्रमण, विष, बीमारी तथा किसी प्रकार की चोट शामिल होते हैं। तनाव के भावनात्मक कारक तथा दबाव कई सारे हैं और अलग–अलग प्रकार के होते हैं। कुछ लोग जहां "स्ट्रेस" को मनोवैज्ञानिक तनाव से जोड़ कर देखते हैं, तो वहीं वैज्ञानिक और डॉक्टर इस पद को ऐसे कारक के रूप में दर्शाने में इस्तेमाल करते हैं, जो शारीरिक कार्यों की स्थिरता तथा सतुलन में व्यवधान पैदा करता है। जब लोग अपने आस–पास होने वाली किसी चीज से तनाव ग्रस्त महसूस करते हैं, तो उनके शरीर रक्त में कुछ रसायन छोड़कर अपनी प्रतिक्रिया देते हैं। ये रसायन लोगों को अधिक ऊर्जा तथा मजबूती प्रदान करते हैं।

1.2 भोध अध्ययन का महत्वः–

शैक्षिक क्षेत्र में जब भी कोई अनुसंधान कार्य किया जाता है तो अध्ययन की उपयोगिता महत्व प्रकृति का महत्व सिद्व करना इसलिये आवश्यक है कि हम इसके द्वारा यह सिद्ध कर सके कि इस अनुसंधान के परिणाम व निष्कर्ष शैक्षिक जगत को किस प्रकार प्रभावित करेंगें। इसके अतिरिक्त औचित्य शक्षिक समस्या कि उपादेयता को सिद्व करने में सहायक होता है। एक राष्ट्र की सफलता उसके भावी नौजवानों के कंधो पर होती है। इन भावी नौजवानों का निर्माण राष्ट्र के विद्यालयों के कंधो पर होती है। अर्थात विद्यालयों के द्वारा हमारे राष्ट्र की दिशा निर्धारित होती ह। विद्यालयों में ही युवाओं के अन्दर मूल्यों व संस्कारों की सुन्दरता की गणना, आध्यात्मिक व नैतिकता के गुणों से उन्हें बनाना विद्यालय का प्रमुख उद्देश्य है।

(1) अभिभावकों की दृष्टि से–अपने बालिका के लिए प्रत्येक अभिभावक यह चाहता है कि वह भविष्य के जीवन को सामाजिक स्तर के अनुरूप या उससे उच्च स्तर पर ले जाये परन्तु कुछ बाह्य कारक बालिका के अवरोध हो जाते है। अगर इन कारको को अभिभावक जान ले और उनके अनरूप बालिकाओं को निर्देश देने लगे तो बालिकाओं के चंहुमुखी में कोई बाधाएं नहीं रहेगी। संवेगात्मक बुद्धि से संबंधित अध्ययन अभिभावकों की अपनी बालिका का भविष्य निर्धारण में मदद करेंगा।

(2) समाज की दृष्टि से – कहते है कि महिला दो परिवार का हिस्सा होती है। वह हमारे समाज का दर्पण हे। अतः बालिकाओं का संवेगात्मक बुद्धि स्तर अच्छा है तो वह समाज में रहकर परिवार के प्रति अच्छे निर्णय ले सकेगी।

(3) शैक्षिक दृष्टि से– यह शोध अध्ययन नवीन व मौलिक है क्योंकि पूर्व आवासीय विद्यालयों की बालिकाओं के संवेगात्मक बृद्धिमता, आत्मविश्वास और शैक्षिक वातावरण का अध्ययन नहीं हुआ है। अतः इस शोध कार्य का इन विद्यालयों को लाभ मिल सकेगा।

(4) प्रशासको की दृष्टि से–वर्तमान समय में निर्देशन प्रजातांत्रिक भारत की प्रमुख आवश्यकता है प्रशासन चाहता है कि वह प्रत्येक व्यक्ति को अपने अनुरूप कार्य करने की इजाजत मिले जिससे कार्यो में गुणात्मक पूर्ण विकास हो। इस शोध में संवेगात्मक बुद्धि जैसे चर के अध्ययन से प्रशासको को विद्यालय के वातावरण को व्यवस्थित करने में बल मिल सकेंगा।

(5) अध्यापको की दृष्टि से– शिक्षा बालक का चंहुमुखी विकास करती है। बालकों का विकास तब ही संभव है। जब शिक्षक स्वयं बालक मे ंअन्तर्निहित गुणों को पहचानें। समझने एवं पहचाने के बाद ही शिक्षक अपने आप को निर्देशन एवं मार्गदर्शक के रूप में बालकों के सम्मुख पा सकेगा। इस दृष्टिकोण से यह शोध शिक्षकों के लिए बालिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि की पहचान कर बालिकाओं के सर्वांगीण विकास करने में मदद कर सकेगा।

(6) शोध कार्य की दृष्टि से– प्रस्तुत शोधकार्य भावी शोध शोधकार्य के लिए आधार प्रस्तुत करेगा। जिससे भविष्य में संवेगात्मक बुद्धि चर का विभिन्न चरों के साथ संबंध ज्ञात करने संबंधी अवसर प्राप्त होगें।

(7) सरकार की दृष्टि से– प्रस्तुत शोध कार्य से सरकार बालिका शिक्षा में उन्नयन दृष्टिकोण अपनाते हुऐ विद्यालयों का विकास कर सकेगें। आज के इस वैश्वीकरण के युग मे बालिकाओं को बेहतर शिक्षा उपलब्ध करा सकेंगे।

वर्तमान में आवश्यकता इस बात की है कि यह पता लगाया जाये कि आवासीय और गैर–आवासीय विद्यालयों की छात्राओं के विभिन्न मनोवैज्ञानिक पक्षों जैसे संवेगात्मक बुद्धि में किस स्तर तक भिन्नता पाई जाती है।

इन भिन्नताओं को ध्यान में रखकर बालिकाओं की शिक्षा की योजनाओं का निर्धारण किया जा सके ताकि बालिकाएं अपने सामाजिक जीवन में भली–भांति समायोजित हो सके और विद्यालयों की मूलभूत आवश्यकताओं को ध्यान मे रखकर सरकार योजनाओं का क्रियान्वयन कर सके। अतः इय आधार पर शोधकर्ता ने इस दिशा में शोधकार्य करना उपयुक्त समझा जो समाज के हित में सहायक व फलदायी सिद्ध होगा।

2. साहित्यावलोकन

1. अग्निहोत्री रविन्द्र (2009) ने आधुनिक भारतीय शिक्षा की समस्याओं का अध्ययन किया व निष्कर्ष निकाला कि उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों मे समयोजन एक प्रमुख समस्या है।

2. दुबे, भावेश चंद्र (2011) ने विद्यर्थियोकि शेक्षिक उप्लब्धि पर शैक्षिक अभीप्रेरणा तथा समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन किया। व निष्कर्ष निकाला कि सही तरीके से अभिप्रेरित बालक उच्च शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करते है।

3. पारीक, अलका व गोस्वामी (2017) ने माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थीयो के समायोजन का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया।व निष्कर्ष प्राप्त किया कि समायोजित बालक की शैक्षिक उपलब्धि उच्च स्तर की होती है।

युसुफ, एच. टी., युसफ, ए., गंबरी, ए. आई. (2015) ने छात्र–अध्यापको के संवेगात्मक बुद्धि लब्धि गुणांक का उनकी भविष्य उत्पादकता के प्रभाव का अध्ययन किया। उन्होने पाया कि महिलाओं और पुरुषों के संवेगात्म्क बुद्धि गुणांक में सार्थक अंतर है। खोज ने खुलासा किया कि एक भावनात्मक रूप से बुद्धिमान छात्र–अध्यापक अधिक सफलता प्राप्त करने वाला होता है।

बुनयान श. एल. बूनयान एस. ई. और लू वाई. एम. (2014) ने अपनी खोज में यह साबित किया है कि संवेगात्मक बुद्धि उन बहुत से कारणों में से एक है जिन पर बच्चों की शैक्षिक सफलता निर्भर करती थी। शोध से यह तथ्य भी प्रदर्शित करता है कि महिलाओं का माध्य स्कोर पुरुषों के माध्य स्कोर से कम है, जबकि लिंग के मध्य संवेगात्मक बुद्धि का अंतर सार्थक नहीं है।

4. अमालू, एम. एन. द्वारा सन(2018) वर्णनात्मक सर्वेक्षण शोध का प्रयोग करके यह जाँचने का प्रयत्न किया कि क्या संवेगात्मक बुद्धि माध्यमिक विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की भविष्यवक्ता होती है? प्रस्तुत शोध में आंकड़े इमोशनल इंटेलिजेंस स्केल तथा गणित विषय की उपलब्धि परीक्षा के आधार पर एकत्रित किए गए। इस शोध के परिणाम अनुसार संवेगात्मक बुद्धि के सभी तत्व जैसे संवेगों का प्रबंधन, स्वयं का अभिप्रेणन, सामाजिक कौशल, समानुभूति एवं आत्मजागरुक्ता शैक्षिक उपलब्धि पर सम्मलित रूप से प्रभाव डालते हैं। अनुसंधान से आये परिणामों के आधार पर शोधकर्ता ने वर्तमान शैक्षिक कार्यक्रम में संवेगात्मक बुद्धि को बढाने के लिए कार्यक्रमों को रखने की सिफारिशें की ।

3. शोध के उद्देश्य

- किशोरों में सांवेगिक बुद्धि के स्तर का अध्ययन करना।
- किशोरों में तनाव के स्तर का अध्ययन करना।

4. भाोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का चयन किया है।

न्यादर्श : प्रस्तुत अध्ययन में सुविधा की दृष्टि से चार विद्यालयों के छात्र–छात्राआ को शामिल किया गया। सीमित समय एवं साधनों के कारण माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों का अध्ययन करने के लिए चार सरकारी विद्यालयों के 14 से 18 वर्ष के विद्यार्थियों का चुनाव किया गया।

उपकरण – 1. संवेगात्मक बुद्धि – विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन करने के लिए डॉ. एस. के मंगल और डॉ. शुभ्रा मंगल के परीक्षण का प्रयोग किया है।

तनाव – विद्यार्थियों के तनाव का अध्ययन करने के लिए डॉ. जाकी अख्तर (लेक्चरर डिपार्टमेन्ट ऑफ साइकॅलॉजी) के परीक्षण का प्रयोग किया है।

5. वर्गीकरण एवं विश्लेषण

प्रस्तुत शोध के लक्ष्यानुसार विश्लेषण करने के लिए निम्न सारणियों में वर्गीकरण किया गया है।

तालिका संख्या 1 सांवेगिक बुद्धि तथा तनाव के बीच सम्बन्ध ज्ञात करना।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11Issue 01, January- 2021
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|

चर	कुल संख्या	मध्यमान	सहसम्बन्ध
संवेगिक बुद्धि	200	62.55	0.139
तनाव	200	145	

सह सम्बन्ध r=0.139 सह सम्बन्ध गुणांक पाया गया। जो अल्पकोटी का धनात्मक सह सम्बन्ध पाया गया है। उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि किशोरों की संवेगात्मक बुद्धि तथा तनाव में सह सम्बन्ध r=0.139 गुणांक पाया गया है। यह सार्थक अल्प धनात्मक सह संबंध गुणांक है। अतः परिकल्पना स्वीकृत है।

तालिका संख्या 2 सांवेगिक बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि के बीच सम्बन्ध ज्ञात करना।

चर	कुल संख्या	मध्यमान	सहसम्बन्ध
संवेगिक बुद्धि	200	65.5	0.055
शैक्षिक उपलब्धि	200	64.9	

सह सम्बन्ध r=0.055 सह सम्बन्ध गुणांक पाया गया। जो अल्पकोटी का धनात्मक सह सम्बन्ध है। उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि किशोंरों में सांवेगिक बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि में सहसम्बन्ध r=0.055 गुणांक है अतः परिकल्पना स्वीकृत है।

तालिका संख्या 3 तनाव व शैक्षिक उपलब्धि के बीच सम्बन्ध का अध्ययन।

चर	कुल संख्या	मध्यमान	सहसम्बन्ध
तनाव	200	145	0.128
शैक्षिक उपलब्धि	200	69.8	

सह सम्बन्ध r=0.128 सह सम्बन्ध गुणांक पाया गया । जो अल्पकोटी का धनात्मक सह सम्बन्ध पाया गया है। उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि किशोंरों के तनाव तथा शैक्षिक उपलब्धि में सहसम्बन्ध r=0.128 गुणांक पाया गया। यह सार्थक अल्प धनात्मक सह सम्बन्ध गुणांक है अतः परिकल्पना स्वोकृत है।

6. निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध में निष्कर्षो की विवेचना की जाये तो शैक्षिक उपलब्धि व संवेगात्मक बुद्धि आदि चरों के मध्य सहसम्बन्ध व तुलना की जाये तो अधिकांश प्रश्नों पर सार्थक प्रभाव व अन्तर दिखाई देता है।

प्रस्तुत शोध के समाज के लिए भी महत्वपूर्ण निहिताथ है। विद्यालय ही समाज के लिए भावी नागरिक तैयार करता है। यदि विद्यालय अपने कर्तव्यों के लिए जवाबदेह नही होगा तो वह अच्छें नागरिक विकसित नही कर सकता।

यदि शिक्षक वर्ग अपने व्यवसाय के प्रति समर्पित होंगे तथा आध्यात्मिक गुणों से परिपूर्ण होंगे तभी वे अपने छात्रो के बौद्धिक विकास के साथ साथ सामाजिक एवं आध्यात्मिक विकास करने में अपना योगदान प्रदान कर सकेंगे। विद्यालय में होने वाली सहशैक्षिक गतिविधियों के द्वारा उनमें समायोजन, संवेगात्मक विकास व संस्कार निर्माण किया जा सकता है। जो समाज के हित मे भी होगा। विद्यालय में ही विधार्थी रूपी भावी नागरिकों के संवगों का प्रबन्धन कर उन्हे नैतिक व सामाजिक, व्यवसायिक व राष्ट्र के प्रति समर्पित नागरिक बनाने का प्रयास किया जा सकता है। जिससे समाज अपराधमुक्त हो प्रगति कर सके। ांवेगिक बुद्धि स्तर के अध्ययन के उपरान्त परिणामों से ज्ञात हुआ कि छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि की अपेक्षा अच्छी होती है। 2. तनाव के स्तर के अध्ययन के उपरान्त परिणामों से ज्ञात हुआ कि औसत श्रेणी के अन्तर्गत छात्रों में तनाव का स्तर छात्राओं के बराबर पाया गया। 3. छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के अध्ययन से हमें ज्ञात होता है कि औसत श्रेणी के अन्तर्गत छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि की प्रतिशतांक छात्रों की अपेक्षा अधिक पाई गयी है। 4. किशोरों (छात्र–छात्राओं) की सांवेगिक बुद्धि तथा तनाव के अध्ययन के उपरान्त हमें ज्ञात होता है कि उनके बीच कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया। 5. किशोरो मे सांवेगिक बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि के अध्ययन के उपरान्त यह ज्ञात होता है कि इन दोनों के बीच कोई सार्थक अन्तर

नही है। 6. किशोरों में तनाव व शैक्षिक उपलब्धि के अध्ययन के उपरान्त यह ज्ञात होता है कि इन दोनों के बीच कोई सार्थक अन्तर नही है। 7. सावेंगिक बुद्धि, तनाव एवं शैक्षिक उपलब्धि के अध्ययन के उपरान्त यह ज्ञात होता है कि इन तीनों के बीच कोई सार्थक अन्तर नही है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- ओबियामा, हेलन ओगोमिका (2012). ए स्टडी ऑफ द इमोशनल इन्टेलिजेन्स एंड लाइफ एडजस्टमेंट ऑफ सीनियर सेकेन्डरी
- स्कूल स्टूडेन्ट्स इन नाइजीरिया. द ओरलेण्डो इंटरनेशनल एकेडेमिक कॉन्फेरेन्स, अडियेमी कॉलेज ऑफ एजुकेशन ओन्डा, नाइजीरिया. साइटेड इन कान्फ्रेन्सेस.क्लूटऑनलाइन.कॉम।

- अंगीरा, के. के. (1990). ए स्टडी ऑफ एडजस्टमेन्ट इन रिलेशन टू फेमिली स्ट्रक्चर एण्ड बर्थ ऑर्डर.
- इंडिया जर्नल ऑफ करंट साइकोलोजिकल रिसर्च, 5(2), 69–72.
- कलस्टन, आर. (2008). द रिलेशनशिप बिटवीन इमोशनल इन्टेलीजेन्स एंड एकेडमिक एचीवमेन्ट : इम्पलीकेशन ऑफ बर्थ ऑर्डर बेसड ऑन सोशल रैंक, 114, केपेला यूनिवर्सिटी
- कलस्ट, एरे कोटो (2011). कॉग्निटिव स्किल ऑफ मेथेमेटिकल प्रोब्लम सॉल्विंग ऑफ ग्रेड 6 चिल्ड्रन. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इन्नोवेटिव इंटरडिसिप्लिनरी रिसर्च, 1, 323–340.
- पाठक, पी.डी.(2009): "शिक्षा मनोविज्ञान" विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा
- शर्मा, आर. ए. (2008) "शिक्षा अनुसंधान" आर. लाल बुक डिपो, मेरठ
- अपाध्याय, भागर्व एवं त्यागी (2007): "अधिगम का मनोसामाजिक आधार एवं शिक्षण" अरिहन्त शिक्षा प्रकाशन, जयपुर
- भार्गव महेश (2006): "आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन" एच.पी. भार्गव बुक हाऊस, कचहरी घाट आगरा
- सिंह अरूण कुमार (2005): "मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियॉ" मोती लाल बनारसीदास प्रकाशन, पटना
- वर्मा रामपाल सिंह एवं उपाध्याय, राधावल्लभ (2001): "शिक्षण एंव अधिगम का मनोविज्ञान" विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा – 2
- कपुर, आर एण्ड स्वाफ ए. (1997): "एक्सकूटीव ई क्यू" ओरीयेन्ट बुक्स न्यूयार्क
- गोल मेन डी. (1995): इमोशनल इन्टेलीजेन्सी बेन्थम, न्यूयार्क
- राय पारसनाथ (1993): "अनुसंधान परिचय" लक्ष्मी नारायण अग्रवाल आगरा
- श्री वास्तव, डी. एन एण्ड (1990): "मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी" विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा
- मेयर, जे.डी एण्ड सालोवे, पी (1993): "द इन्टेलीजेन्स ऑफ इमोशनल इन्टेलीजेन्सी"